INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH IN COMMERCE, IT, ENGINEERING AND SOCIAL SCIENCES (IJRCIESS) ISSN: 2349-7793
Vol. 6 No. 10 (2012): October
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

असंगठित क्षेत्र में महिला उद्यमी

डॉ0 केशरी नन्दन मिश्रा

सदस्य, माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश

विकास की सफलता का निर्धारण करने वाले प्रमुख कारक समाज में महिलाओं की स्थिति है। किसी राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को तब तक पूर्ण रूप से महसूस नहीं किया जा सकता है जब तक कि उसकी महिलाओं को एक अधीनस्थ स्थिति तक सीमित रखा जाता है और उनकी प्रतिभा का पता नहीं लगाया जाता है। महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण घटक आर्थिक स्वतंत्रता है। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण तीन आयामों के माध्यम से संभव है। आय सुरक्षा, उत्पादक संपत्तियों के स्वामित्व और उद्यमिता कौशल की प्राप्ति। सरकार भारत में उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए कई प्रोत्साहन और सहायता सुविधाएं प्रदान करती है। उद्यमिता प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह उन्हें अर्थव्यवस्था की विकास प्रक्रिया से जोड़ेगी (एम.आर. बीजू 2006)। गैर-सरकारी संगठनों की भी महिलाओं के बीच उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है (वसंत देसाई 2005)। उद्यमिता महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बढ़ाती है। महिला उद्यमिता का विकास भी हमारी योजना प्राथमिकताओं का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। भारत में महिला उद्यमिता के विकास के लिए कई नीतियां और कार्यक्रम लागू किए जा रहे हैं। हमारे देश के कई राज्यों में बड़ी संख्या में योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रचलन में होने के बावजूद, महिला उद्यमियों को अभी भी बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जो वास्तव में अत्यधिक परेशान करने वाली हैं।

मुख्य शब्द: । उद्यमिता, सामाजिक, आर्थिक, महिला, विकास, कौशल, अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

भारतीय आर्थिक व्यवस्था का मुख्य क्षेत्र असंगठित क्षेत्र रहा है। असंगठित क्षेत्र के माध्यम से और बड़े पैमाने पर, अर्थव्यवस्था में रोजगार के प्रमुख क्षेत्र का गठन करता है। देश की अधिकांश कामकाजी आबादी असंगठित क्षेत्र में पाई जाती है। इस क्षेत्र में शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में मजदूरी कमाने वाले, टुकड़े-टुकड़े करने वाले श्रमिक, अनौपचारिक श्रम, भुगतान और अवैतनिक घरेलू श्रम शामिल हैं। शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी असंगठित क्षेत्र में महिलाओं का दबदबा है। ये लड़कियां विभिन्न वित्तीय गतिविधियों में पारिश्रमिक के साथ-साथ गैर-लाभकारी भी हैं। गैर-लाभकारी गतिविधियाँ हालांकि उनकी आजीविका की सहायता के लिए इन चीजों को करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, उन्हें वित्तीय लाभ से वंचित करती हैं। उनके पास अपनी नौकरी के लिए कोई कानूनी सुरक्षा नहीं है और न ही उन्हें कोई सामाजिक सुरक्षा मिलती है और उनकी काम करने की स्थिति गंभीर है। वे घोर गरीबी में रहते हैं और उन्हें वित्तीय प्रणाली की मुख्यधारा से बाहर रखा गया है (एनसीईयूएस 2007)।

भारत में महिलाएं संवेदनशील स्थिति में हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लड़कियों ने खुद को असंगठित क्षेत्र की स्व-रोजगार गतिविधियों में घरेलू कामगारों के रूप में या अपने परिवार की आय में सहायता के लिए किसी अन्य सूक्ष्म उद्यमशीलता मनोरंजन में संलग्न किया है। उनमें से कई छोटे उद्यमों में लगे हुए हैं। असंगठित क्षेत्र विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ा है और अतिरिक्त श्रम शक्ति को अवशोषित कर रहा है। कम वेतन और असुरक्षा का कारण असंगठित क्षेत्र है। उनकी प्रगति के लिए आदर्श प्राथमिक सुविधाओं का अभाव है। इसलिए प्रचार उपायों को निगमों के दृष्टिकोण से डिजाइन और लागू किया जाना चाहिए, साथ ही साथ महिलाओं को भी। गतिविधियों के त्वरित विविधीकरण का अभाव आंशिक रूप से महिलाओं के लिए नए मौद्रिक अवसरों की कमी के कारण है। लड़कियों के प्रवास पर प्रतिबंध हैं जो उनके लिए उपलब्ध विकल्पों को भी सीमित करते हैं (दास बी. 2003)।

भारत का उद्यमिता और आर्थिक विकास:

जैसा कि अतीत में कहा गया है, भारतीय आर्थिक प्रणाली की प्रमुख समस्याएं बेरोजगारी और गरीबी हैं। इसमें उद्यमिता का महत्व इस सच्चाई में निहित है कि एक 'परिवर्तन एजेंट' के रूप में एक उद्यमी विकास के लिए स्वयं जिम्मेदार है। भारत एक संयुक्त आर्थिक प्रणाली है जहां सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र दोनों एक साथ काम कर रहे हैं। देश और गैर-सार्वजनिक उद्यमिता सह-अस्तित्व में है और परिणामस्वरूप उद्यमशीलता की क्षमता वित्तीय विकास की तकनीक में सभी भेद बनाती है। भारत अनुकूल स्थानीय मौसम की आपूर्ति करता रहा है जहां उद्यमिता को बहुत अच्छी तरह से पोषित किया जा सकता है। भारत का उद्यमी इतिहास सदियों पुराना है। औद्योगिक गतिविधियों की शुरुआत ग्रामीण समुदाय में हस्तशिल्प से हुई। चयनित शहरों में संगठित औद्योगिक गतिविधियों पर विचार किया गया है। अमर काल से अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत तक, भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को अंतरराष्ट्रीय ख्याति पसंद थी। 18वीं शताब्दी के अंतिम दशक के दौरान, भारतीय हस्तशिल्प उद्योग में ज्यादातर इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के कारण गिरावट आई। ब्रिटिश शासन के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी और प्रबंधकीय संगठन की रणनीतियों ने उद्यमिता के उछाल में योगदान दिया। द्वितीय विश्व युद्ध की अवधि की अवधि के लिए भी भारत में व्यापार फला-फूला। स्वतंत्रता के बाद के दौर में उद्यमिता तेजी से बढ़ने लगी।

भारत में उद्यमियों ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं, उद्योगों और बाजारों का मार्ग बदल दिया है। उन्होंने नए उत्पादों का आविष्कार किया है और उन्हें बाजार तक पहुंचाने के लिए निगमों और निर्माण की क्षमता विकसित की है। उन्होंने प्रौद्योगिकी में नवाचारों को पेश किया है और वर्तमान से दूर स्रोतों के पुन: आवंटन पर दबाव डाला है, दो नए और अधिक उत्पादक उपयोगों का उपयोग करता है। कई सुधारों ने हमारे रहने के पैटर्न को बदल दिया है और नए सेवा उद्योगों को बदलने या बनाने के लिए कई सेवाएं पेश की गई हैं। इनमें औद्योगिक बैंकिंग, बीमा, बचत प्रणाली, दूरसंचार, मनोरंजन, कार्यस्थल सांख्यिकी प्रणाली, भोजन वितरण, चिकित्सा उपचार और बहुत कुछ शामिल हैं। उद्यमियों का नया युग उचित रूप से शिक्षित, कुशल और प्रेरित और निष्पक्ष विचारक है जो नवाचार के माध्यम से

समाज को बदल सकते हैं। भारत में वर्तमान सरकारी सहायता उपकरण में एसएसआई के लिए वस्तुओं के आरक्षण, अधिकारियों की खरीद के लिए वस्तुओं का आरक्षण, चार्ज वरीयता, उपयोगिता सेवाओं के लिए प्राथमिकता, आर्थिक प्रोत्साहन, वित्तीय सहायता प्रणाली, ढांचागत सुविधाएं प्रदान करने, विज्ञापन के संदर्भ में उद्यमिता प्रचार उपायों की एक मात्रा शामिल है। और विपणन सेवाएं, प्रशिक्षण, डेटा प्रसार, प्रणाली की निगरानी आदि।

भारत के विकास में महिला उद्यमियों का महत्व:

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकसित देशों में स्वरोजगार करने वाली लड़कियों की संख्या कई गुना बढ़ गई। भारत में औद्योगिक उद्यमियों के रूप में महिलाओं की भागीदारी तुलनात्मक रूप से उन्नीस सत्तर के दशक से शुरू होने वाली एक वर्तमान घटना है। अधिकांश महिलाओं को ग्रामीण और शहरी असंगठित क्षेत्र में कम वेतन, कम कुशल, कम विज्ञान और कम उत्पादकता वाली नौकरियों में लक्षित किया जाता है। परीक्षणों और कठिनाइयों को साझा करने के लिए उनके पास लंबी यादें हैं; उनका मिशन चुनौतियों से भरा रहा है। उन्हें सार्वजनिक भेदभाव और आलोचना का भी सामना करना पड़ा है। स्वयं को स्वतंत्र उद्यमी के रूप में संगठित करने से पहले पारिवारिक विरोध और सामाजिक बाधाओं को दूर करना पड़ा (विद्या हट्टंगड़ी 2007)। महिलाओं में उद्यमिता की बड़ी प्रतिभा है। महिलाओं की घरेलू क्षमताएं जैसे मानव और समय प्रबंधन और पारिवारिक बजट व्यावसायिक उद्यम के संदर्भ में तुरंत हस्तांतरणीय हैं। महिलाओं में विशिष्ट कार्यों और प्राथमिकताओं को संतुलित करने, ग्राहकों और कर्मियों के साथ संबंध बनाने में गर्व और सफलता का पता लगाने और अपने व्यक्तिगत भाग्य में हेरफेर करने और कुछ ऐसा करने की क्षमता है जो वे सार्थक पर विचार करते हैं। उनके पास अपना खुद का व्यवसाय स्थापित करने और प्रबंधित करने की क्षमता और इच्छाशक्ति है। उत्पादक चैनलों के लिए महिलाओं की इन विशेषताओं और शक्तियों का दोहन किया जाना है। लड़कियों के बीच लघु व्यवसाय का निर्माण और विकास एक कठिन कार्य है। भले ही व्यावसायिक उद्यम में महिलाओं का योगदान आर्थिक विकास के प्रमुख तत्वों में से एक है, फिर भी अक्सर महिलाओं के पास बुनियादी उद्यम शिक्षा, व्यवसाय जमा और विज्ञापन के अवसरों तक पहुंच नहीं होती है। संख्या मौद्रिक गतिविधियों के बीच स्वीकार्य मात्रात्मक संतुलन बनाए रखना आर्थिक प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है, जिसे पुरुषों और महिलाओं को पसंद की समान स्वतंत्रता देने के लिए कार्य करना चाहिए। जब तक महिलाएं इसमें पूरी तरह से शामिल नहीं हो जातीं, तब तक आर्थिक सुधार का तरीका अधूरा और एकतरफा होगा। समग्र रूप से एक समाज का अभिविन्यास, वांछनीयता के संबंध में कि महिलाओं को देश के विकास में समान भूमिका निभानी चाहिए, न केवल महिलाओं की बल्कि समग्र रूप से उपयोग की प्रगति के लिए बहुत महत्वपूर्ण पूर्व शर्त है।

भारत में ग्रामीण महिला उद्यमी:

आजादी के छह दशकों के बाद भी पिछड़ापन और गरीबी अधिकांश भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। महिलाओं के लिए निरक्षरता, भू-संपत्ति और अन्य संसाधनों तक पहुंच की कमी, कौशल उद्यमिता गुणों की अनुपस्थिति, पुरुष प्रभुत्व, निर्भरता सिंड्रोम आदि जैसे कारकों के कारण स्थिति बदतर है, (ललिता महादेवन 2009)।

स्थानीय से वैश्विक स्तर पर विकास में महिलाएं बहुत महत्वपूर्ण खंड हैं। कार्य उत्पादकता, रोजगार सृजन और आय उन्मुख गतिविधियों में उनकी भूमिका कई सामाजिक-आर्थिक बाधाओं (बबीता अग्रवाल, एट अल। 2007) से बाधित है। इस प्रकार ग्रामीण लोगों और विशेष रूप से महिलाओं की संभावित उत्पादकता को जुटाना लचीला आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए अपरिहार्य है जो लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर खींचेगा (मुकेश उपाध्याय 2011)।

उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण:

उद्यमिता आय सृजन का स्रोत प्रदान करती है जो महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करती है। यह सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण साधनों में से एक है। कई अध्ययनों ने साबित किया है कि महिला उद्यमिता महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। महिलाओं के सशक्तिकरण में आर्थिक अवसर, सामाजिक समानता और व्यक्तिगत अधिकार जैसी कई चीजें शामिल हैं। काम करने और अच्छी आय अर्जित करने की स्वतंत्रता के बिना सशक्तिकरण का लक्ष्य कठिन है (ग्रिश्मा एम. खोबरागड़े 2013)। इसलिए उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह तब प्राप्त किया जा सकता है जब समाज महिलाओं को सामाजिक भागीदार के रूप में मान्यता देता है, उन्हें समान अधिकार प्रदान करता है, उन्हें समान शिक्षा, स्वास्थ्य प्रदान करता है और उन्हें समान रूप से और प्रभावी रूप से भाग लेने की अनुमति देता है (रथिंद्र नाथ, एट अल। 2006)। इस प्रकार स्वरोजगार या उद्यमिता के माध्यम से आय अर्जित करने के लिए महिलाओं का समर्थन करना सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। (अनीता चौधरी 2012)

महिला सशक्तिकरण में उद्यमिता की भूमिका

आज वैश्विक स्तर पर आर्थिक नीति में महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी गई है। उद्यमिता विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अध्याय महिला उद्यमियों के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण में उद्यमिता की भूमिका की व्याख्या करता है। सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं जैसे आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने की शक्ति और सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी पर यहां चर्चा की गई है। यह महिलाओं और उद्यमशीलता विकास के लिए विभिन्न योजनाओं पर भी प्रकाश डालता है जो वसई तालुका में लागू की जाती हैं। यह महिला उद्यमियों के विकास में सरकार और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, उनके व्यवसाय के विकास और विकास के लिए उत्तरदाताओं की भविष्य की योजनाओं और परिवार, समाज और सरकार से महिलाओं की अपेक्षाओं को भी सामने लाता है।

भारत में असंगठित क्षेत्र में रोजगार:

असंगठित क्षेत्र में उद्यम के लिए राष्ट्रीय आयोग (एनसीईयूएस), जिसे अर्जुन सेनगुप्ता समिति के नाम से भी जाना जाता है, ने 2006 में भारत सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी। समिति की रिपोर्ट का अनुमान है कि भारत में असंगठित क्षेत्र में 340 लाख से अधिक कर्मचारी थे, और उन्होंने देश के राष्ट्रीय आर्थिक उत्पादन में लगभग 60% का योगदान दिया।

लगभग 28 करोड़ श्रमिक ग्रामीण क्षेत्र में थे, जिनमें से 22 करोड़ कृषि क्षेत्र में होने का अनुमान लगाया गया था। करीब छह करोड़ शहरी इलाकों में थे। महिलाओं ने 11-12 करोड़ बनाए, जिनमें से लगभग आठ करोड़ कृषि में लगे हुए थे। राजीव शर्मा और सुनीता चितकारा (2005) ने देखा कि अधिकांश असंगठित गतिविधियाँ कृषि और सेवा क्षेत्र तक ही सीमित हैं, इसका कारण यह है कि ऐसे कोई कड़े कार्य नहीं हैं जो इन क्षेत्रों के भीतर की गई गतिविधियों को ध्यान में रख सकें और इन गतिविधियों को शुरू किया जा सके। कम पूंजी समर्थन और बुनियादी ढांचा। असंगठित गतिविधियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू परिसर के भीतर अधिक प्रचलित हैं। इन असंगठित उद्यमों के सामने सबसे बड़ी समस्या पूंजी सहायता और ढांचागत सुविधाओं की कमी है। इंद्रजीत बैराग्य (2010) ने औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र पर उदारीकरण के प्रभाव का अध्ययन किया। उनका कहना है कि राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद (एनडीपी) में अनौपचारिक क्षेत्र की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है। भारत के एनडीपी का लगभग 60 प्रतिशत इसी क्षेत्र से है। साथ ही इस क्षेत्र में रोजगार का स्तर भी बढ़ रहा है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए उद्यमिता विकास आवश्यक है। उद्यमियों की निम्न सीमा हमारे देश के आर्थिक पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार मुख्य कारकों में से एक है। समाज में उनकी आर्थिक स्थिति की भूमिका और जवाबदेही के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता के साथ महिलाओं की छिपी हुई उद्यमशीलता क्षमता धीरे-धीरे विकसित हो रही है। महिला उद्यमियों के योगदान के साथ-साथ उनकी गतिविधियों के संचालन में उनके सामने आने वाली समस्याओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। नीति निर्माताओं के लिए महिला उद्यमियों तक पहुंचने की बहुत गुंजाइश है। वर्तमान अध्ययन असंगठित क्षेत्र में महिला उद्यमों की भूमिका और उनकी समस्याओं की समझ में योगदान करने का प्रयास करता है। यह उन तरीकों को भी सामने लाने का प्रयास करता है जिनसे उनकी स्थितियों में सुधार किया जा सकता है।

उत्तरदाताओं की उद्यमशीलता की गतिविधियों ने उनके बीच एक निश्चित स्तर का सशक्तिकरण किया है। महिलाओं द्वारा अर्जित आय ने उन्हें परिवार और समाज में एक विशेष स्तर का आत्म-सम्मान, प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता प्रदान की है। महिलाएं अधिक आत्मनिर्भर, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी हो गई हैं। वे कुशलतापूर्वक और सफलतापूर्वक दोहरी जिम्मेदारी का प्रबंधन करने में सक्षम थे। उनमें आत्मविश्वास रखने वाली महिलाओं ने मनोवृत्ति में परिवर्तन का अनुभव किया और सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया। बदलती स्थिति और बढ़ते आत्मविश्वास ने न केवल महिलाओं के प्रति लोगों के रवैये बल्कि खुद के प्रति महिलाओं के रवैये को भी काफी प्रभावित किया है। वे व्यावसायिक, शैक्षिक, राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में अधिक से अधिक समानता के लिए प्रयास कर रहे हैं और प्राप्त कर रहे हैं।

References

- Krech and Crutch (1962): *Individual in Society*, McGraw Hill, Inc. New York. 1962. p.7

- Manimekalai N. and Abdullah A. Mohammed (2008): *Women Entrepreneurship – A Case of Microenterprises*, Sage publication New Delhi.
- Mascarenhas Romeo S. (2010): *Entrepreneurship Management*, Vipul Prakashan, Mumbai.
- More J.B., Mahajan B.L. (2008): "Swamshayata Gat: Gramin Vikas Va Daridra Nirmulan Marg", *Arthsanvad*, July-sept.2008. vol.32 no.2
- Narasaiah P. V. and Ramakrishnaiah K. (2004): "DWCRA programme in Cuddapah District: An Evaluation", *SEDME*, Vol. No. 31, No.3.
- Nath Rathindra, Pramanik Ashim, Kumar Adhikari (2006): *Gender Inequality and Women's Empowerment*, Abhijeet Publication, New Delhi.
- Raheem A. Abdul and Prabu C., (2007): *Women Entrepreneurs: Problems and Prospectus*, New Century Publication, New Delhi.
- Rajiv Sharma and Sunita Chitkara (2005): *Informal Sector in the Indian System of National Accounts*, Retrieved on 15 February 2012 (www.informal sector).
- Rana Kranti (2001): *People's Participation and Voluntary Action Dimensions, Roles and Strategeries*, Kanishka Publisher, New Delhi.
- Sahay A., Nirjar A. (2006): *Entrepreneurship Education, Research and Practice*, Excel Books, New Delhi. pg. 158-59
- Sengupta Arjun (2006): *The National Commission for Enterprises in the Unorganised Sector* (NCEUS) report, Government of India.